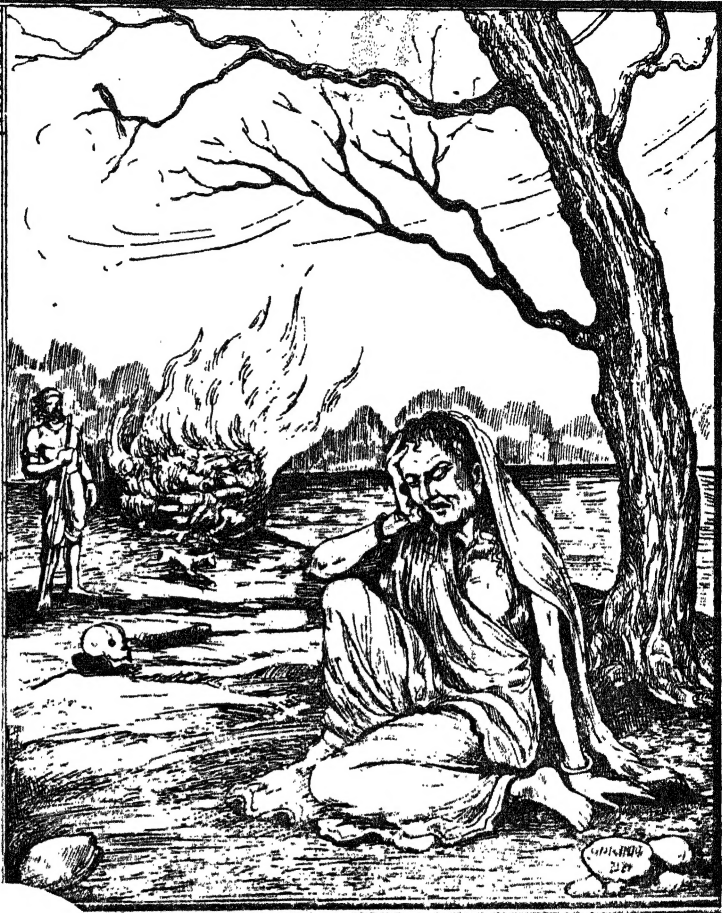


ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



८५८
८५८

आत्मा पाप है, पापी;
कुछ दूर इस तट के,
तम की मौम घाड़ियों में--
ले हैं दीप मरघट के॥